उन्नीसवीं शताब्दी में दलित–उत्थान और अस्पृश्यता उन्मूलन के प्रयासों में स्वामी दयानन्द का योगदान – एक विमर्श

Title
Font Size 18 Bold
Center Text

सीमा चौधरी[1a]

Author Name
Capital Bold Font 13
Center Text
All in same line

[a]एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,जे0वी0 जैन कॉलेज, सहारनपुर,उ0प्र0 भारत

Affiliation
Regular Letter,
Normal font 12
Center Text

ABSTRACT

Abstract Heading
Capital Bold font 10
Center Text

ABSTRACT

19वीं शताब्दी में हिन्दु समाज के अन्तर्गत जाति व्यवस्था में आयी विकृतियों और जटिलताओं को दूर करने तथा दलितों के उत्थान और अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए उल्लेखनीय भूमिका निभाने वाले समाज सुधारकों में एक दयानन्द प्रथम साहसी समाज सुधारक थे, जिन्होंने जन्म पर आधारित जाति–व्यवस्था और अस्पृश्यता का तीव्रतम विरोध करते हुए दलितों और अस्पृश्यों को समाज की मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया। उन्होंने मात्र जन्म के आधार पर ब्राह्मणों की सर्वोच्च स्थिति को स्वीकार करने से इंकार कर दिया। उन्होंने वर्ण–व्यवस्था एवं आश्रम व्यवस्था को व्यक्ति और समाज के संतुलित विकास का महत्त्वपूर्ण साधन बताया। स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज अपनी शिक्षण संस्थाओं में अछूतों और दलितों को प्रवेश दिया। वास्तव में स्वामी दयानन्द का तत्त्व चिन्तन एकांगी न होकर सर्वांगीण तथा मानवी प्रवृत्तियों के सामूहिक विकास का हित साधक था। वस्तुतः स्वामी दयानन्द ने वर्ण–व्यवस्था का समर्थन करते हुए भी जिस तरह से जन्म पर आधारित जाति–व्यवस्था और अस्पृश्यता का प्रबल विरोध किया, वह भारतीय समाज के जीर्णोद्धार के सर्वाधिक सशक्त प्रयासों में से एक था।

Abstract
Regular, bold
Italic, font 12
Justify Text

Keywords: *व्यवहारवादी, अग्रवर्ती, एकांगी, सामाजिकता, मनुष्यकृत, जीर्णोद्धार*

Keywords 5-8
Bold, Italic
Font 12, Justify Text

प्रस्तावना

Headings
Capital, Bold, font 12
Align Text left

"19वीं शताब्दी के सुधार आन्दोलनों में आर्य समाज के पूर्ववर्ती ब्रह्म समाज ने यद्यपि समाज सुधार की विभिन्न योजनाओं को क्रियान्वित करने का यत्न किया किन्तु जाति–प्रथा पर आघात करने की सामर्थ्य ब्रह्म समाज सुधारकों में भी नहीं थी। ब्रह्म समाज के उपासना–स्थल पर वेदपाठी ब्राह्मणों को एक पर्दे के पीछे बिठाया जाता था तथा उनमें अन्य वर्णस्थ लोगों को प्रवेश करने का अधिकार नहीं था।"(फारक्यूहर,1967 पृ034) ब्राह्मणों ने मनुस्मृति को अपने अधिकारों और विशेष स्थिति का आधार बना रखा था। दयानन्द ने मनुस्मृति से ही यह सिद्ध किया कि उत्तम विद्या और स्वभाव वाला व्यक्ति ही ब्राह्मण कहलाने योग्य होता है। "जो व्यक्ति शूद्र कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान गुण कर्म और स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र–ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाये, वैसे ही जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ हो और उसके गुण, कर्म, स्वभाव शूद्र के सदृश हों तो वह शूद्र हो जाये।"(मनुस्मृति10/65) उस दौर में धर्म एवं दार्शनिक चिन्तन के क्षेत्र में ब्राह्मणों को एकाधिकार प्राप्त था, जिसका दुरुपयोग वे नाना प्रकार के आव्रजनमूलक विधि निषेधों के प्रवर्तन के द्वारा कर रहे थे। सामन्त वर्ग के लोग जो क्षत्रिय वर्ण में आते थे, अपने जीवन का लक्ष्य मात्र भोग–विलास की पूर्ति एवं शारीरिक सुखोपभोगों को ही मानते थे। वैश्य समुदाय तो वैध एवं अवैध उपायों से धनोपार्जन करने तथा दलित वर्ग के श्रमिकों का शोषण और उत्पीड़न को ही अपने जीवन का चरम लक्ष्य मान बैठा था। ऐसी स्थिति में दलितों तथा समाज के पिछड़े हुए लोगों की हीन दशा का सार्वत्रिक पतन का तो अनुमान ही किया जा सकता है।(भारतीय,1978 पृ049)

Content
Regular, font 12
Justify Text

(फारक्यूहर,1967 पृ034)

Citation in APA Style
(Surname,Pub Year:Page)

सन्दर्भ

घासीराम(संवत 2007) *महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन–चरित्र, भाग–1,* अजमेर, आर्य साहित्य मण्डल लि0, अजमेर,

शारदा, हरविलास संपा (1933) *दयानन्द कोमीमोरेशन* अजमेर, वैदिक मन्त्रालय,

विद्यालंकार, सत्यकेतु एवं हरिदत्त विद्यालंकार (1982) *आर्य समाज का इतिहास, प्रथम भाग,* दिल्ली, आर्य स्वाध्याय केन्द्र

भारतीय, भवानी लाल (1978) *आर्य समाज : अतीत की उपलब्धियाँ तथा भविष्य के प्रश्न,* जालंधर, आर्य प्रतिनिधि सभा,

भट्ट, गौरीशंकर (1968) *भारतीय नवजागरण प्रणेता तथा आन्दोलन,* साहित्य सदन,

फारक्यूहर, जे0एन0(1967) *माडर्न रिलीजियस मूवमेण्ट्स इन इण्डिया,* दिल्ली, मुंशी मनोहरलाल,

References in APA Style, Arranged in Alphabetical order, Without No Numbering

Font
Kruti Dev 10
Line Space
1.5